महिला जनसंख्या एवं कार्य में भागीदारिता दर: गौतमबुद्ध नगर जिले के संदर्भ में अध्ययन

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह
प्राचार्य एवं प्रोफेसर, भूगोल विभाग
दिगम्बर जैन कॉलिज, बड़ौत,
बागपत, (उ.प्र.)

रश्मि ढाका
शोधार्थी भूगोल विभाग
दिगम्बर जैन कॉलिज, बड़ौत,
बागपत (उ.प्र.)

सारांशिका

वर्तमान में देश में बढ़ते हुए अर्थव्यवस्था के आकार के कारण कार्यबल की भागीदारिता सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। इसलिए प्रस्तुत शोध पत्र के लिए निम्न उद्देश्य निर्धारित किए है। जिले में महिलाओं के साक्षरता में वृद्धि का कार्यबल भागीदारिता पर प्रभाव का अध्ययन करना एवं जिले में कार्यबल भागीदारिता में लिंग असमानता का अध्ययन करना है क्योंकि भारत देश में जैसे– जैसे सकल घरेलू उत्पाद की मात्रा बढ़ रही है, वैसे– वैसे ही अर्थव्यवस्था का आकार भी बढ़ रहा है, जिसका परिणाम जनसंख्या में कार्यबल सहभागिता दर भी बढ़ रही है

मुख्य शब्दः महिला जनसंख्या, कार्य, भागीदारिता, अध्ययन

प्रस्तावनाः

भारत देश में जैसे– जैसे सकल घरेलू उत्पाद की मात्रा बढ़ रही है, वैसे– वैसे ही अर्थव्यवस्था का आकार भी बढ़ रहा है, जिसका परिणाम जनसंख्या में कार्यबल सहभागिता दर भी बढ़ रही है जिसका वर्ष 2050 में 800 मिलियन होने की सम्भावना है। वर्तमान जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 121 करोड़ है जिसमें से 48.53 प्रतिशत आबादी महिलाओं की है। वर्ल्ड पॉप्यूलेशन रिव्यू के अनुसार वर्ष 2020 में कुल प्रक्षेपित जनसंख्या 140 करोड़ होने का अनुमान है जिसमें से 662.90 मिलियन आबादी महिलाओं की होगी। आबादी का लगभग 50 प्रतिशत आबादी महिलाओं की होने के बावजूद भी कार्यबल में महिलाओं सहभागिता दर अत्यंत कम है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य का गौतमबुद्ध नगर जिले को चुना गया है, जिसकी अवस्थिति राज्य के पश्चिमी भाग में गंगा–यमुना नदी के दोआब क्षेत्र में $28^{\circ}6$ से $28^{\circ}40$ उत्तरी अक्षांश एवं $77^{\circ}17$ से $77^{\circ}42$ पूर्वी देशान्तर के मध्य 1282 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर विस्तृत है। जिसके उत्तर में गाजियाबाद जिला, दक्षिण में अलीगढ़ जिला, पूर्व में बुलन्दशहर एवं पश्चिमी में जिले की सीमा का निर्धारण प्राकृतिक सीमा के द्वारा होता है जिसका निर्माण यमुना नदी के द्वारा हरियाणा व दिल्ली राज्य के साथ किया जाता है।

गौतमबुद्ध जिला, उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ संभाग के पांच जिलो में से एक है, जिसे 3 उपखण्डों में विभाजित किया गया है। जिले में जनगणना 2011 के अनुसार 13 कस्बें है, जिनमें से 6 सांविधिक एवं 7 जनगणना नगर है एवं 320 गांव है।

जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार जिले की कुल आबादी 16.48 लाख है जिसका 40.9 प्रतिशत ग्रामीण तथा 59.1 प्रतिशत आबादी नगरीय है। वहीं लिंगानुसार कुल आबादी का 54.01 प्रतिशत पुरूष तथा 45. 99 प्रतिशत महिलाऐं है। कुल जनसंख्या घनत्व 1286 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर एवं लिंगानुपात 851 महिला प्रति हजार पुरूष है।

शोध का उद्देश्य

वर्तमान में देश में बढ़ते हुए अर्थव्यवस्था के आकार के कारण कार्यबल की भागीदारिता सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। इसलिए प्रस्तुत शोध पत्र के लिए निम्न उद्देश्य निर्धारित किए है–

(1) जिले में महिलाओं के साक्षरता में वृद्धि का कार्यबल भागीदारिता पर प्रभाव का अध्ययन करना,

(2) जिले में कार्यबल भागीदारिता में लिंग असमानता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाऐं

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए शोधार्थी के द्वारा निम्न परिकल्पनाऐं निर्धारित की है।

(1) महिला साक्षरता दर में वृद्धि के कारण कार्यबल में महिलाओं की सहभागिता दर में वृद्धि हुई है।

(2) औद्योगिक विकास का प्रभाव महिला कार्यबल पर पड़ा है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र के सम्पादन के लिए शोधार्थी के द्वारा साक्षात्कार के साथ द्वितीयक समंकों का उपयोग किया है। जिसमें वर्ष 2001 एवं 2011 की जनगणना प्रतिवेदन, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग विकास संस्थान के प्रतिवेदनों से समंकों का संकलन कर सारणीयन द्वारा विश्लेषण किया गया है। साथ ही परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए सांख्यिकी विधियों में माध्य एवं मानक विचलन के साथ कार्ल पियर्सन की सह–संबंध विधि का प्रयोग किया गया है।

महिला जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य का जनसंख्या के आधार पर 59वां सबसे बड़ा जिला है जहां पर 59 प्रतिशत के लगभग नगरीय आबादी निवास करता है। यहां पर नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा जैसे नगर अपने औद्योगिक बेल्ट के कारण प्रसिद्ध है, जो न केवल प्रदेश,

बल्कि देश की बड़ी आबादी को रोजगार प्रदान करते है। प्रस्तुत अध्ययन के अनुसार जिले की महिला आबादी का विवरण निम्न तालिका के द्वारा दर्शाया गया है।

सारणी संख्या 1– जिले में महिला आबादी की स्थिति

वर्ष	कुल आबादी	कुल महिला	ग्रामीण महिला	नगरीय महिला
वर्ष 2001	1202030	549211	346484	202227
वर्ष 2011	1648115	757901	314201	443700

स्रोतः– जनगणना प्रतिवेदन, भारत सरकार

सारणी से ज्ञात होता है कि वर्ष 2001 में कुल आबादी का 45.69 प्रतिशत आबादी महिलाओं की थी, जिनमें से 63.09 प्रतिशत महिला आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 36.91 प्रतिशत आबादी नगरीय क्षेत्रों में निवास करती थी। वहीं वर्तमान वर्ष 2011 तक महिला आबादी पिछले एक दशक में 38 प्रतिशत की वृद्धि हुई और वर्तमान में महिला आबादी कुल आबादी का 45.99 प्रतिशत हो गई है। जिसका 41.46 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 58.54 प्रतिशत आबादी नगरों में निवास करती है। इससे स्पष्ट होता है कि जिले में पिछले एक दशक में महिलाओं का ग्रामीण आबादी की तुलना में नगरीय आबादी में अधिक वृद्धि हुई है।

जिले में महिला आबादी की वृद्धि दर के साथ साक्षरता के स्तर में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 2001 में जिले की कुल साक्षर जनसंख्या का 675669 थी, जिसमें महिला साक्षरता दर 53.7 प्रतिशत रही है। वही जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार जिले में कुल साक्षर जनसंख्या में 66.20 प्रतिशत की वृद्धि हुई, वही साक्षर महिला की आबादी में 89.64 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जिसके कारण महिला साक्षरता की दर 70. 8 प्रतिशत रही है। जिले में महिला साक्षरता को निम्न सारणी के द्वारा दर्शाया गया है।

सारणी संख्या 2– जिले में महिला साक्षरता

वर्ष	कुल साक्षरता	प्रतिशत	साक्षर महिला	प्रतिशत
वर्ष 2001	675669	68.7%	240920	53.7%
वर्ष 2011	1122947	80.1%	456882	70.8%

स्रोतः– जनगणना प्रतिवेदन, भारत सरकार

श्रम बल में भागीदारिता– श्रम बल में भागीदारिता की दर को कुल श्रम बल का कुल जनसंख्या के अनुपात के तौर पर परिभाषित किया जाता है। श्रम बल में कार्यरत श्रमिकों को जनगणना विभाग के अनुसार दों भागों में विभाजित किया गया है– प्रथम मुख्य श्रमिक एवं द्वितीय सीमान्त श्रमिक।

मुख्य श्रमिक– मुख्य श्रमिक वह होता है जो किसी आर्थिक गतिविधि में वर्ष में कम से कम 183 दिन कार्य करता है।

सीमान्त श्रमिक– सीमान्त श्रमिक वह होता है जो साल भर में 183 दिन से कम किसी आर्थिक उत्पादन गतिविधि में संलग्न रहता है।

सारणी संख्या 3– जिले में श्रमिकों की स्थिति

वर्ष	कुल श्रमिक	महिला	मुख्य श्रमिक	महिला	सीमान्त श्रमिक	महिला
2001	363814	59876	308884	35088	54930	24788
2011	569109	125725	458492	80617	110617	45108

स्रोतः– जनगणना प्रतिवेदन, भारत सरकार

उपरोक्त सारणी 3 में जिले में कुल श्रमिकों एवं महिला श्रमिकों की कुल आबादी की संख्या दर्शायी गई है। जिससे यह ज्ञात होता है कि जनगणना वर्ष 2001 के अनुसार कुल श्रमिकों में से महिला श्रमिकों की आबादी मात्र 16.46 रही है। जिसमें कुल महिला श्रमिकों का 58. 60 प्रतिशत आबादी मुख्य महिला श्रमिकों की तथा 45.12 प्रतिशत सीमान्त श्रमिकों के तौर पर नियोजित थी।

जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार जिले में कुल महिला श्रमिकों में 65849 महिला श्रमिकों की वृद्धि हुई है। वहीं मुख्य महिला श्रमिकों में 45529 एवं सीमान्त श्रमिकों में 20320 महिला श्रमिकों की वृद्धि हुई है।

जिले में वर्ष 2001 में महिलाओं की कुल श्रमबल भागीदारिता दर 4.98 प्रतिशत रही, जबकि वर्ष 2011 में 7.63 प्रतिशत रही है। जबकि कुल श्रम बल भागीदारिता की दर वर्ष 2001 में 30.27 प्रतिशत तथा वर्ष 2011 में 34.53 प्रतिशत रही है।

इसी प्रकार वर्ष 2001 में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की श्रम बल में भागीदारिता दर 5.13 प्रतिशत तथा नगरों में 4.74 प्रतिशत रही, वही वर्ष 2011 के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की श्रम बल में भागीदारिता दर 7.95 प्रतिशत तथा नगरों में 7.41 प्रतिशत रही है।

महिला श्रमिकों का वर्गीकरण

श्रमिकों की आबादी का किसी प्रदेश के औद्योगिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। अध्ययन क्षेत्र में सभी प्रकार के श्रमिकों को तीन वर्गों एवं अन्य श्रमिक वर्गों में विभाजित किया गया है। जिले में वर्ष 2001 में कुल महिला कामगारों की संख्या 59876 रही, जिसमें से 64.44 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 35.56 प्रतिशत महिला श्रमिक नगरों में नियोजित थी।

सारणी संख्या 4–जिले में महिला श्रमिकों की स्थिति

महिला श्रमिकों वर्गीकरण	जनगणना वर्ष 2001			जनगणना वर्ष 2011		
	कुल	ग्रामीण	नगरीय	कुल	ग्रामीण	नगरीय
कृषक	13736	13128	608	13865	12258	1607
कृषि श्रमिक	9655	9085	570	13347	11258	2089
औद्योगिक श्रमिक	4324	3039	1285	13622	7075	6547
अन्य श्रमिक	32161	13334	18827	84891	22979	61912
योग	**59876**	**38586**	**21290**	**125725**	**53570**	**72155**

स्रोतः– जनगणना प्रतिवेदन, भारत सरकार

जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार जिले में कुल महिला श्रमिकों की संख्या 125725 हो गई जिसका 42.61 प्रतिशत महिला श्रमिक ग्रामों में तथा 57.39 प्रतिशत महिला श्रमिक के तौर पर नगरों में नियोजित थी।

निष्कर्ष

प्रथम परिकल्पना के अनुसार जिले में महिला साक्षरता दर में वृद्धि एवं महिलाओं की कार्यबल में भागीदारिता दर के मध्य संबंध ज्ञात करने का प्रयास किया है।

सारणी संख्या 5– महिला साक्षरता दर एवं श्रमबल भागीदारिता दर में सहसंबंध

वर्ष	महिला साक्षरता दर	$\bar{x} = 64.05$ $(x - \bar{x})$ dx	dx^2	महिला कार्यबल में सहभगिता दर	$\bar{y} = 6.31$ $(y - \bar{y})$ dy	dy^2	$dx \times dy$
2001	57.3	-6.75	45.56	4.98	-1.33	1.77	8.98
2011	70.8	+6.75	45.56	7.63	+1.32	1.74	8.91
योग			**91.12**			**3.51**	**17.89**

$$\text{सहसंबंध गुणांक } (r) = \frac{\Sigma dxdy}{\sqrt{\Sigma dx^2 \times \Sigma dy^2}}$$

$$= \frac{17.89}{\sqrt{91.12 \times 3.51}}$$

$$= \frac{17.89}{17.88} = 1.000$$

सारणी संख्या 5– महिला साक्षरता दर एवं श्रमबल भागिदारिता दर में सहसंबंध उपरोक्त सहसंबंध सूत्र के अनुसार सहसंबंध का मान 1 प्राप्त हुआ है जो यह दर्शाता है कि जिले में महिलाओं की साक्षरता दर एवं श्रम बल में भागीदारिता दर में पूर्ण धनात्मक संबंध पाया गया है। जिससे हमारी प्रथम परिकल्पना सही साबित होती है।

द्वितीय परिकल्पना में औद्योगिक विकास का प्रभाव महिला कार्यबल पर देखा गया है। जिसके लिए जिले में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग विकास संस्थान से प्राप्त समंकों का उपयोग किया है। इसके अनुसार जिले में वर्ष 2001 में कुल औद्योगिक इकाईयों की संख्या 362 थी जिनमें 2412 व्यक्ति नियोजित थे, वही वर्ष 2011 में इकाईयों की संख्या 1196 हो गई तथा इनमें नियोजित व्यक्तियों की कुल संख्या 25222 रही है।

वर्ष	औद्योगिक इकाईयां का प्रतिशत	$\bar{x} = 7.89$ $(x - \bar{x})$ dx	dx^2	महिला कार्यबल में सहभगिता दर	$\bar{y} = 6.31$ $(y - \bar{y})$ dy	dy^2	$dx \times dy$
2001	3.66	-4.23	17.89	4.98	-1.33	1.77	5.63
2011	12.11	+4.22	17.80	7.63	+1.32	1.74	5.57
योग			**35.70**			**3.51**	**11.20**

$$\text{सहसंबंध गुणांक } (r) = \frac{\Sigma dxdy}{\sqrt{\Sigma dx^2 \times \Sigma dy^2}} = \frac{11.20}{\sqrt{35.70 \times 3.51}}$$

$$= \frac{11.20}{11.19} = 1.000$$

उपरोक्त सहसंबंध सूत्र के अनुसार भी सहसंबंध का मान 1 प्राप्त हुआ है जो यह दर्शाता है कि जिले में औद्योगिक इकाईयों में वृद्धि के साथ ही श्रम बल में महिलाओं की भागीदारिता दर भी बढ़ी है। जो इन दोनों के मध्य दर्शाऐं गए पूर्ण धनात्मक संबंध से ज्ञात होता है। जिससे हमारी द्वितीय परिकल्पना सही साबित होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

- जनगणना प्रतिवेदन, वर्ष 2001 एवं 2011, भारत सरकार।
- गौतम बुद्ध नगर की संक्षिप्त औद्योगिक रूपरेखा, एमएसएमई– विकास संस्थान, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार।
- मित्रा, अरूप (2017), "लेबर मार्केट पार्टिसिपेशन इन इण्डियाः ए रीजन एण्ड जेंडर स्पेसिफिक स्टेडी" प्रथम संस्करण, स्प्रिंगर ब्रिफ्स इन इकोनोमिक्स।
- नाथ, कमला (जनवरी, 2020), "द इण्डियन वुमेन्स जर्नी," द लास्ट फाइव डिकेड्स, कमला नाथ द्वारा संपादित, निकोर एसोसिएट्स।
- नाथ, कमला (मई, 1970), "फिमेल वर्क पार्टिसिपेशन एण्ड इकोनोमिक डवलपमेंटः ए रिजनल एनालिसिस," इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 5, संख्या 21, पृ. सं. 846–849।
- शर्मा, पी. एम., (2009), "भूगोल में सांख्यिकीय विधियां," राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान।